ISSN - 2231-1130
वर्ष–षष्ठम् ; सितम्बर–2015

उमैय्याकालीन सभ्यता एवं संस्कृति : एक दृष्टि

डॉ0 रज़िया परवीन*

शोध सार –

प्रस्तुत प्रपत्र ऐतिहासिक अध्ययनों पर आधारित है। इस प्रपत्र में उमैय्याकालीन सभ्यता एवं संस्कृति के विकास पर एक संक्षिप्त दृष्टि डालने का प्रयास किया गया है। उमैय्याकाल इस्लामी साम्राज्य के प्रभुत्व तथा सभ्यता संस्कृति के विकास का काल था। उमैय्यावंश के खलीफाओं ने न केवल इस्लामी साम्राज्य का अद्वितीय विस्तार किया बल्कि प्रशासन एवं संगठन सम्बन्धी आवश्यक सुधार भी लाये। साथ ही इस काल में समाज में शिक्षा, साहित्य, ज्ञान–विज्ञान तथा कला कौशल के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक प्रगति हुई।

Key-Words – उमैय्याकालीन प्रशासन, सामाजिक व्यवस्था, शिक्षा, साहित्य एवं कौशल।

उमैय्याकालीन प्रशासन –

अमीर मुआविया द्वारा 661 ईसवी में उमैय्यावंश की स्थापना की गयी। 750 ई0 तक इस वंश के शासकों ने इस्लामी साम्राज्य के ऊपर शासन किया। उमैय्याकाल इस्लामी साम्राज्य के प्रभुत्व एवं सभ्यता संस्कृति के विकास का काल था। अमीर मुआविया एक सफल नेता ही नहीं वरन एक योग्य शासक एवं संगठनकर्ता भी थे। इस्लामी शासन व्यवस्था में उन्होंने महत्वपूर्ण परिवर्तन किये तथा साम्राज्य को संगठित कर उसे अत्यंत शक्तिशाली बना दिया। विभिन्न प्रान्तों से आये हुए शिष्ट मण्डलों के प्रतिनिधियों के साथ वह शिष्टता से मिला करता था और उनकी समस्याओं

* असि0 प्रोफेसर (अरब कल्चर), नारी शिक्षा निकेतन पी0जी0 कालेज, लखनऊ।

का समाधान किया करता था। मुआविया ने खलीफा का पद प्रतिष्ठित किया और उसके अधिकारों में अपार वृद्वि की। प्रशासनिक सुविधा और सुव्यवस्था के उद्देश्य से मुआविया ने सम्पूर्ण साम्राज्य को 5 प्रान्तों में विभाजित किया और प्रान्तों की देखभाल के लिए अमीरों की नियुक्ति की। भूमिकर राजस्व का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्रोत था मुआविया ने कृषि सम्बन्धी साधनों को समुन्नत बनाने का सफल प्रयास किया। मुसलमानों को जो भत्ते दिये जाते थे उसमें मुआविया ने ढाई प्रतिशत कटौती कर दी। कृषि सम्बन्धी साधनों को समुन्नत बनाने का भी सफल प्रयास किया। इस्लामी अनुश्रुतियों के द्वारा न्याय प्रशासन के क्षेत्र में ताजियों की नियुक्ति का श्रेय हज़रत उमर को दिया जाता है। जिसने 643 ईसवी में मिश्र में पहले काजी की नियुक्ति की। मरवान द्वितीय (744–750 ई0) के शासनकाल में मुआविया द्वारा सैन्य व्यवस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाया गया। सेना के परम्परागत श्रेणियों का अंत करके कुर्दुस नामक एक नये सैनिक दस्ते की व्यवस्था की।

सामाजिक व्यवस्था –

सम्पूर्ण इस्लामी साम्राज्य को चार वर्गो में विभाजित किया गया था – शासक वर्ग, मवाली, जिम्मी, दास।

शासक वर्ग में खलीफा, उनके परिवार के लोग, प्रान्तपति, सेनानायक, अधिकारी वर्ग के लोग तथा अरब विजेता शामिल थे। अरबों का दूसरा वर्ग मवाली था इसमें वे नये मुसलमान वर्ग के लोग आते थे जिन्हें शक्ति के साथ इस्लाम स्वीकार करने के लिए बाध्य किया गया था। इन्हें खिराज (Land Tax) देना पड़ता था। समाज में तीसरा वर्ग जिम्मियों का था। इस वर्ग में गैर इस्लाम धर्म के अनुयायी जैसे – ईसाई, यहूदी, साबी आदि आते थे। समाज में यह सभी सुविधाओं का उपयोग करते थे। चौथा वर्ग गुलामों का था जो सबसे निम्न वर्ग था। गुलाम विभिन्न विजित देशों के होते थे। समाज में गुलामों की संख्या काफी अधिक थी। गुलाम स्त्री और पुरुष दोनों होते थे किन्तु उनकी स्थिति अपेक्षाकृत संतोषजनक थी।

मनोरंजन के अनेक साधन लोग भिन्न भिन्न प्रकार के खेलकूद घुड़दौड़, मुर्गे की लड़ाई, शिकार आदि से अपना मनोरंजन करते थे। खलीफा वलीद पहला उमैय्या शासक था जिसने सार्वजनिक दौड़ को संरक्षण प्रदान किया। खलीफा सुलेमान ने घुड़दौड़ की राष्ट्रीय प्रतियोगिता का प्रबन्ध किया।

शिक्षा – यद्यपि सामान्य शिक्षा का प्रचलन नहीं था फिर भी सामान्य वर्ग के लोग मस्जिदों में अपनी संतानों को शिक्षा दिलाते थे। वस्तुतः शिक्षा पर धर्म का काफी प्रभाव था। छात्रों को अरबी भाषा तथा व्याकरण के अतिरिक्त कुरान, हदीस का ज्ञान उपलब्ध कराया जाता था। राजदरबार में शहजादों की शिक्षा के लिए शिक्षक नियुक्त होते थे। खलीफा उमर द्वितीय की शिक्षा में विशेष रुचि थी। उसने शिक्षकों को यह आदेश दिया कि वह शहजादों को मनोरंजन से घृणा करने की शिक्षा दें।

साहित्य – उमैय्याकाल में अरबी साहित्य का अभूतपूर्व विकास हुआ। अरबी साहित्य के विकास में अरब के विद्वानों के अतिरिक्त खलीफा तथा शासक वर्ग के लोगों ने यथेष्ट योगदान दिया। खलीफा ने कवियों और विद्वानों को संरक्षण प्रदान किया तथा पारितोषिक, अनुदान, वजीफा आदि देकर उनके उत्साह को काफी बढ़ाया। इस काल में अरबी साहित्य के विभिन्न पक्षों का विकास हुआ यथा – काव्य साहित्य, गद्य साहित्य, व्याकरण, इतिहास, संभाषण, पत्राचार आदि।

विज्ञान – उमैय्याकाल वैज्ञानिक प्रगति का युग माना जाता है। इस काल में चिकित्सा शास्त्र, रसायन शास्त्र, ज्योतिषशास्त्र आदि का व्यापक विकास हुआ। अरब वासियों को प्राचीनकाल से ही चिकित्सा शास्त्र का ज्ञान रहा है। मन्त्र–तन्त्र तथा जादू टोना के साथ रोगियों को औषधियां दी जाती थीं। कुछ ऐसे नुस्खे भी मिले हैं जिनमें शहद को प्रधान औषधि के रूप में लिखा गया है। इन्हें लोग पैगम्बर का नुस्खा मानते हैं किन्तु मध्यकालीन इतिहासकारों ने जैसे इब्ने खलदून ने भी इसे मानने से इंकार कर दिया है।

हल हरीश इब्ने खालदा अरब का पहला चिकित्सक था। प्रमुख चिकित्सकों में इब्ने–उसाल तायाजूक, मासरजौया हैं। खलीफा वलीद ने कुष्ठ रोग के इलाज के लिए प्रबन्ध कर प्रशंसनीय कार्य किया था। उमर द्वितीय ने चिकित्साशास्त्र के अध्ययन केन्द्र को स्कन्दरिया से हटाकर उसे एन्टिओक तथा हरान में स्थापित किया। जाबिर इब्ने हयान, जाफर अल सादिक का नाम प्रमुख रसायन वैज्ञानिकों में लिया जाता है।

कला कौशल – उमैय्याकाल इस्लामी सभ्यता एवं संस्कृति के उद्‌भव एवं विकास का काल माना जाता है। शिक्षा, साहित्य, धर्म, ज्ञान, विज्ञान आदि के क्षेत्रों में इस काल में अरबों ने काफी प्रगति की साथ ही कला कौशल के विभिन्न अंगो का अभूतपूर्व विकास हुआ। अरबों की एक विशेषता यह भी रही है कि उन्होंने अपने अधीनस्थ देशों के लोगों से निसंकोच ग्रहण किया जो उन्हें उचित लगी इतना ही नहीं ग्राहय तत्वों को उन्होंने आत्मसात भी किया। इस प्रकार श्रेष्ठ तत्वों को अपनी सभ्यता में समुचित स्थान देकर अरबों ने एक सम्मिश्रण किन्तु सम्पन्न सभ्यता को जन्म दिया जो इस्लामी सभ्यता के नात से प्रसिद्ध हुई।

उमैय्याकाल स्थापत्यकला, चित्रकला एवं संगीतकला के विकास का काल था। स्थापत्यकला के विकास का सम्बन्ध धर्म के साथ काफी गहरा था। इस्लामी स्थापत्य कला भी पहले धार्मिक भवनों में निःसारित होती है। इस दृष्टि से इस्लाम में मस्जिदों का निर्माण बड़े महत्व का है। पैगम्बर द्वारा मदीना में इस्लाम की पहली मस्जिद का निर्माण हुआ। जैसे जैसे अरब अन्य देशों के सम्पर्क में आये उनकी कला निखरती गयी। उमैय्याकाल में शामी, मिस्री, ईराकी, ईरानी, उन्दुलसी, उत्तरी अफ्रीका आदि अनेक रूपों में इस्लामी स्थापत्यकला प्रस्फुटित हुई। इस कला का सर्वोच्च प्रदर्शन मस्जिद की मेहराब मीनारों और दीवारों पर किया गया।

चित्रकला – मुहम्मद साहब तथा कुरान ने चित्रकला को अधार्मिक करार दिया है। उमैय्याकाल में चित्रकला सम्बन्धी रूढ़िवादी विचारधारा का

त्यागकर आंशिक रूप से मनुष्यों और जानवरों के चित्र बनाये गये। निःसंदेह यह एक क्रान्तिकारी कदम था। इस काल में पच्चीकारी, अलंकरण, फूलदान से निकली हुई पत्तियों, चमकीले पत्तों, पक्षियों, अंगूर की लताए तथा खजूर के वृक्ष आदि के चित्र बड़ी संख्या में बनाये गये। फिर भी धार्मिक प्रतिबंधों के कारण चित्रकला और मूर्ति निर्माण कला की वांछित प्रगति नहीं हो पायी।

संगीत – अरब में संगीत का इतिहास काफी पुराना है। इस्लाम के अभ्युदय से पूर्व अरब में कारवानी, जंगी, मजहबी तथा इश्किया गीतों का प्रचलन था परन्तु इनमें कारवानी तथा हुदी सबसे लोकप्रिय था। अरब में संगीत तथा रागों का उद्भव हुदी से ही माना जाता है। सभी उमैय्याशासक कविता और संगीत के महान प्रेमी थे। विभिन्न प्रकार के वाद्ययन्त्रों – मुज़हर, बांसुरी, बूक, मगरिफा, झांझ, शहनाई, डफ आदि का प्रयोग होता था। प्रमुख संगीतकारों में अल–गिरीद, इब्ने मुहरिज, माबाद, जमीला, हबान, सलाम आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उमैय्याकाल में संगीत के विकास में उमैय्या खलीफाओं के योगदान को आंखे से ओझल नहीं किया जा सकता है। अतः स्पष्ट है कि सभ्यता एवं संस्कृति की दृष्टि से उमैय्या शासनकाल उल्लेखनीय माना जाता है।

संदर्भ –

1. मध्यकालीन इस्लाम – डा0 विपिन बिहारी सिन्हा, पेज नं0 95
2. History of Islami People, Cari Brockelmann.
3. Kitab al - Wulah, Al Kindi ed by R. Guest, PP 300 - 301
4. Tabri, Vol-II, P. 1944, IBN Khaladun, Vol-III, P. 165
5. Masudi OP-Cit Vol. xiii, Page 165
6. IBN AL Gawari, Sirat Umar P. 56
7. Quoted in Hitti Op. Cit P.253, Let the first Moral Lession Impressed upon them be hatred by means of amuesment.

8. IBN Khaldun, Mukaddarmah P. 412

9. IBID, P.121, Hitti OP- Cit, P. 220

10. IBN - ABI - USABIYAH Vol.1, Page - 116

11. P.K. Hitti, Op. Cit, P. 227.